दरशब्रतनाटक (बागकेमोती)

पतिने निश्चय कर लिया यह रहने की नाय।
गहने सब उतरायके लीनी संग लिवाय ॥पृष्ट २०॥

* श्रीवीतरागाय नमः *

श्रीदशव्रत नाटक

अर्थात्—

बागके मोती

लेखकः—

हरप्रसाद जैन, (पाली)

—०००—

प्रकाशकः—

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,

१६१।१, हरीसन रोड, कलकत्ता।

—०००—

प्रथम बार } १००० { न्यो० चारआना
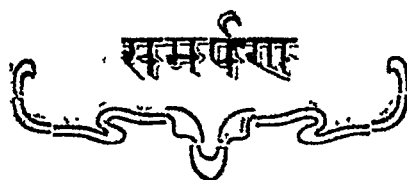
छन्द—परमार्थमें जिन व्यक्तियोंका चित्त रहता है सदा।
रत धर्ममें रहते व्यसन खोटे नहीं करते कदा॥
जिनका है सुःख प्रदायिनी अतिशय सुकोमल शुभ गिरा।
अर्पण है यह उन जनोंका जिनसे सुशोभित है धरा॥

हरप्रसाद जैन
(पाली)

साङ्गीत।

दरशब्रत नाटक

मंगला चरण।

दोहा—ऋषभ आदि दे वीरयत श्रीजिन जे चौवीस।
हृदयाङ्गण धारणकरूं पद युगनाऊंशीश॥

चोवोला-पद युग नाऊंशीश कर्मरिपु तुमने सभी निवारे,
दोष अठारह रहित किये उपदेश देय भवतारे।
तारो प्रभु इहिवार पतित (हर) पावन तुमहिं उवारे॥
भवातापमें तपा रहे हैं ये अरि शत्रु हमारे।

दौड़—परम पद पाचों ध्याऊं दरशब्रत नाटक गाऊं।
सुनो सज्जन चित धरके करना दोषाभाव होय
जो सेवक बुद्धी करके।

रङ्गा।

दोहा—याही जम्बू दीपमें भरत क्षेत्र शुभसार।
हथनापुर नगरी वसै स्वर्ग पुरी उनहार॥

चौ०—स्वर्ग पुरी उनहार महल आकाश झूमते भारी।
वाग वगीचे सुन्दर सोहैं ललित लता अति प्यारी॥
श्रीजिन भवन अनेक बसै श्रावक कुलीन सुखकारी।
वित्तादिक सम्पन्न तहां नृपनाम यशोधर धारी॥

क०—नगर ताहीमें अतिधन युत महारथ सेठ रहता था ।
महासेना प्रिया वाकी वाहि सह धर्म गहता था ॥
ध्वजा बावन लसैंताघर दिनारें कोट थी बावन ।
मनोवति थी सुता वाकी रूप युत और गुण गावन ॥
भई जब अष्ट वारषकी गई मुनि ढिग करन पाठन ।
पढ़ी षड़मासके अन्दर सुनाऊं और विज्ञापन ॥
दौड़—याहि विध कुछ दिनवीते, वरष षोड़स अवतीते ।
सोच पितुमन कछु आयौ पुत्री शादी योग हुई ॥
तब प्रोहितको बुलवायौ ।

महारथ सेठ ।

दो०—सुनोंवात मम विप्रवर कहूँ भेद समझाय ।
सुताब्याहके योग हुई चिंता व्यापी आय ॥
चौ०—चिंता व्यापी आय होय जो मेरे सम धनवाना ।
सुन्दर रूप होय वर जोई परनों जाय निदाना ॥
देश देशमें जाय लौटके भी जल्दीसे आना ।
देऊं बहुत इनाम यही मैंने अपने दिल ठाना ॥
दौ०—नहीं टुक ढीलकरीजे वरष सम दिवस व्यतीते ।
द्रव्य टीकाकर आना जाघर वाग्दानहो उनसे हाल
मेरा कह आना ॥

कवि ।

दोहा—सेठ हुकुम हृद धारकर विप्र चलौ तब सोय ।
बीते भ्रमते मास छह मिल्यौ न वर तब कोय ॥

चौ०-मिल्यौ न वर तव कोय भटकता वल्लभपुरमें आया,
देख २ नगरीकी शोभा फूला नहीं समाया ॥
इसही पुरमें लगै ठिकाना यही हृदयमें ध्याया ।
इस उससे पूछता हुआ गृह हेम सेठका पाया ॥
दौ०—हृदयमें अति हुलसाकर, पहुंच हिमदत्त सेठ घर लगा यों कहने हाला ।
और महारथ सेठका उसने दीना पत्र निकाला ॥

विप्रका महारथ सेठसे ।

वहरतवील—हस्थिनापुर नगरमें वसै सेठ इक, कहौ नाम महारथ महालक्ष युत । ध्वजा बावन दिपै सत कहूं तुमसे में सुता ताके जोहै रूववंती अधिक । दीनी तव पुत्र वुधसेनको है वही ॥ भेजीता सेठने मोकूं कहताहूँ सत । कीजे मंजूर जाऊं मो सेठी नगर अपने सेठीको दूहां खवरये सुपत ॥

महारथ सेठ ।

वहरतवील—अच्छा मंजूर मुझकोजो कहतेहो तुम विप्रवर खुशखबरये सुनाना उन्हें । पत्र लेजाइये काम जल्दी करैं व्याहकी लग्न जाकर बताना उन्हें । शुभ कुशलकी खवर बोलिये जायकर हाल मेरा वो सवही जताना उन्हें । आप खुद ही समझदार हैं प्रेम युत शुभ विनय जाय मेरी सुनाना उन्हें ।

कवि ।

दोहा—घड़ीलग्न सुधवायके लीनौ कुंवर बुलाय
घनी द्रव्य निजकरगही टीका दियौ चढ़ाय
चौ०—टीका दियौ चढ़ाय उसीदम चलन हुआ तैयारा।
हेम सेठसे विप्र विदामें दिया द्रव्य अति भारा॥
होकर विदा विप्रने उसने हथनापुर मग धारा।
चलते चलते कुछदिन वीते सबमग किया पिछारा॥
दौ०—आय वह अपनी नगरी। छोड़कर रस्ता सगरी।
सेठघर पहुंचा जाकर
निज सब वाग्दानकी चर्चा कहन लगा मुसकाकर

विप्र।

दो०—इहिं विधबरहै मिलौ मो सुनों सेठधर कान।
वल्लभपुर शुभ नग्र है हेमसेठ है जान॥
चौ०—हेमसेठ है जान पुत्र बुधसेन रूप गुणकारी
विद्या बुद्धि अनूप कहूँ सत मानो बात हमारी॥
भ्रात सात गुणवंत लघू वर कोमल वदन हजारी
कहा बयान करूं ज्यादह इत्यादिक घटना सारी
दौ०—महलमें लटकै मोती चमकती जिनकी जोती,
कहूं सच सच सुन लीजे।
सुधवाओ शुभलग्न सेठ सुनजल्द ढील नहिं कीजे॥

रङ्गा।

दो०—विप्र बचन सुन इस तरह हर्ष लिया उरधार।

तबही सुन्दरी आयकर बोली बचन सम्हार ॥

सुन्दरी ।

दो०—सुनपितु लीजे बातमम गई मुनीश्वर पास ।
दर्शप्रतिज्ञा मैंलई दे मुनिवर की साख ॥

चौ०—दे मुनिवर की साख पुंज गजमोती जबहिंचढाऊं
लई प्रतिज्ञा यह भी तबही भोजन करूँ बनाऊँ ॥
प्राण जाँय तोजांय नहीं पर अपने ब्रतको छुटाऊं ।
सब दुख छार २ करबैया जिन चरनन शिर नाऊं ॥

दौड़—चन्द्र अरु सूर्य टरैंगर । नहीं ब्रतटरै यह मगर ।
यही निश्चय हृदधारौ ।
श्रीमुनिश्वरकी शपथकरी अरु चरननढिग शिरधारौ

सेठ महारथ ।

दो०—दर्श प्रतिज्ञातैं लई, भली करी अवसोय ।
किंतु बात दूजी कठिन, यह दीखत है मोय ॥

चौ०-यह दीखत है मोय कठिन दूजी जो गजमोतिनकी
रहु मम घर जबतलक चढैयो ढेरी गजमोतिनकी ॥
सासुर घर जबजेहु कछुक कठिनाई होय ता दिनकी ।
मिलैना मिलै पुत्री यह अकुलाई मेरे मनकी ॥

दौ०—रहौ जब लग मेरे घर । चढैयौ गज मोतिनलर
होयतादिन कठनाई ।
जादिन सासुर गेहजेह यह बात अधिक दुखदाई ॥

सुन्दरी ।

क०—लई जो जो प्रतिज्ञा है नहीं टालूंगी मैं हरगिज ।
टलैरवि चांन्द्रजी गरचे नहीं टालूंगीमैं हरगिज़ ॥
धसै आकाश धरणीमें धरणि भीलौट जाये यह ।
दई श्रीमुनि शपथ मैं तो नहीं टालूंगी मैं हरगिज ॥

रंगा ।

लावनी—दोनों तरफोंसे हुई व्याह तैयारी, आनन्द बधाये लगीं गावने नारी । हिमदत्त सेठने निवते भेजे भारी आये सबजन जित २ थी रिस्तेदारी । गजरथ तुरंग साडिया पालकीं साजी । तम्बू मंडप अरबी सुतरी छवि छाजी ॥ वीणा तम्बूरा आदि बाजने बाजे । कित बासुरियाकी बोली मीठी छाजे ॥ मिरदंग धुनी होरही कहीं पर न्यारी ॥आनन्द०॥ कितढोल नगाड़े बोलरही सहनाई, सबही वह शोभा मुखसें कही न जाई। सब जन साजे सुन्दर गहनोंसे भारी। मोतीकी चमकसे मिटती थी अंधयारी । इस विध बरात चाली मन मोहनहारी ॥ आनन्द० ॥ सब भांती व्याह "हरि" पूरन हुआ खुशीसे। आ गये लौटकर विदा करा खुश ही से । जिनपूजा दान दिया दीनोको भारी भोजन कीना रहगई अकेली नारी । बोली सासु बहु भोजन करौ पियारी ॥ आनन्द बधाये लगे गावने नारी ॥

दोहा—नहीं दिया उत्तर जभी, बहूमौन उरधार।
बोली सासू फिर तभी, करके बहुत पियार॥

सासु।

दो०—चल बहुअर भोजन करो, हुईहै बहुत अबेर।
जीम चुके सब नगरजन, करो नैक नहिं देर॥

चौ०—करोनेकनहिंदेर बुलावन आईहूँमैं तुमको।
काहे लेयो मौन खड़े इस जगह देर हुई हमको॥
वर्षाओ आनन्द सब जनन निजदिल त्याग शरमको
भोजन कीजे बहू इस समय छोड़ोमौन भरमको॥

दौ०—देखलो खड़े यहांपर, व्यतीता एक पहर भर।
जल्द उठ करो न देरी।
तज दे निज सकुचाई मान बहुअर ये शिक्षा मेरी॥
अच्छा मैं तुम्हारे ससुरसे कहती हूँ॥ सेठ॥

चौबोला—सुन प्राणाधार पिया प्यारे लघु बहू मौन गहलीना है। बीता यह दोय पहर दिन है अबलग भोजन नहिं कीनाहै॥ मैं खड़ी रही उत चार घड़ी बिलकुल उत्तर नहिं दीना है। कीजे प्राणेश उपाय कछुक उस हो भोजन जल पीना है॥

हिमदत्त सेठ।

दुबोला—अर्द्धाङ्गी सुनले बात मेरी हठ करना उससे ठीक नही। लड़की भोली दिल सकुचत है हठकरना उससे ठीक नहीं॥ धीरे २ जब सकुच मिटे अरु

हृदय बिचार होय जबही। मत घबड़ाओ मत
घबड़ाओ भोजन भी कर लेगी तबही ॥

रङ्गा।

दोहा—मिलै न गजमोती मुझे, कहा करूं अब जोय।
हृदय जपै नवकार वह, तजौ अन्न जल सोय ॥
दूजो दिन लग्यो जबै, तब उठ धाई सास।
पहुंची सुन्दरिके कनैं, आगे सुनों हवास ॥

सासू।

ग०—भोजन करो बहू अब दिन दूसरा लगा।
तज मौनको तू इस दम सकुचाईको भगा ॥
उत्तर न देना— ॥ सेठ ॥
ग०—बहुने किया न भोजन दिन बीत दो चुके हैं।
कीजे उपाय कोई बस हम तो थक चुके हैं ॥
सेठ ग०—घरबार त्याग भोजन मम मानलो कही।
संकटको देख करके भोजन करै वही ॥

कवि।

दो०—चौथौ दिन लागौ जबै, खबर करी तिहि तात।
सुन हवाल यह उसी क्षण, आयौ सुन्दरि भ्रात ॥

सुन्दरि भ्रात।

दोहा—सुनौं सजन यह बात मम;धर अति अपना ध्यान।
पहले पूछे बात यह बाद करें सन्मान ॥
चौ०—बाद करें सन्मान हाल हमको बतलादो सारा।

शोक तेजका फैल रहा परवार मांहि अङ्गारा ॥
इसी लिये हे सजन मैंने भेजा तुमको हलकारा।
बीते हैं दिन तीन मौन तब भगनीने हृद धारा ॥

दो०—अन्नजल त्याग दिया है, मौन हृद धार लिया है।
संकट है दिल भारी।
सुनिये सजन बात मेरी यह अपने श्रवण मझारी।

सुन्दरि भ्रात।

वार्ता—अच्छा अभी बहिनके पास जाता हूं और
सब हाल आपको सुनाता हूं।

भ्रातका सुन्दरीसे।

च०—सुनले भगनी मृदु वचन मैं कहूं सुना दुखका
हवाला खड़ा भ्रात है। काहे मौन लियौ छांड़के
अन्न जल बीते तीन दिवस दिलमें अकुलात है॥
पड़ा आनन्दमें है ये संकट अती शोक ही शोक
दीखै कहा बात है। दीजे जल्दी बता अपनी
सारी बिथा मारे दुखके हृदय ये जला जात है॥

सुन्दरी।

च०—भ्रात सुन मैंने लीनी प्रतिज्ञा दरश दुख निवा-
रण मुनीश्वरकी लेके शरण। पुंज मोती चढ़ाऊं
मैं कहती हूं सतकरूं भोजन तभी चाहे होवै मरण।
मुझको मोती नहीं दिखते क्या करूं बस इसीसे

मैने मोन कीना गृहण । करके जल्दी बिदा हस्थिना पुर चलो हस्थिनापुर पहुंचके हो मेरा भरण ।

(सुन्दरी भ्रातका) सेठसे ।

व०—शोक करना तुम्हारा है वेफायदा शोकयुत बात कोई भी पाई नहीं । लड़की है नासमझ खाती दिलमें शरम छोड़ निज गृह बाहर भी आई नहीं । लाज जो कुछ भी था सत सुनाया तुम्हें कोई भी बात तुमसे छिपाई नहीं ॥ कीजे जल्दी विदाकरै भोजन वही और भी कोई दिखाता उपाई नहीं ।

सेठ ।

दोहा—वाह वाह साजन तुमहिंना, कहते हो कछु भेद ।
यह तो हम माने नहीं, सत्य कहौ परि छेद ॥

चौ०-सत्य कहो परि छेद कछुक नहिं इसमें सोच विचारा,
इस घरमें भोजन नहीं करनेका उत्तर दो झट सारा ।
विन भोजन कैसे भेजूं मैं कित है ख्याल तुम्हारा ।
सच सच मुझे बताना अब तुमको है कौल हमारा ।

दौ०—हुआ सम्बन्ध हमारा । बहू आवै हरवारा ॥
होय हरदम कठिनाई ।
याहीसे उस कारणको नहिं रक्खो हृदय छिपाई ॥

सुन्दरी भ्राता ।

लीनी प्रतिज्ञा इसने सत सत तुम्हें सुनाऊं ।
जिन दर्श जब करूं में भोजन करूं बनाऊं ॥

अरु पुंजले गजमोती चमकेगी जिनकी जोती ।
दीखें मुझे न मोती कहतीमें कैसें खाऊं ॥

सेठ ।

वाती—अय पुत्री तूने व्यर्थमें क्यों इतना अपार दुःख सहा, मुझसे क्यों नहीं कहला भेजा जबतक तुम्हारा जीवन रहेगा तबतक हमारे यहाँ बहुतसे मोती हैं ।
सुन्दरीका विदा होना और मालिनका आश्चर्य युक्त आना ।

मालीसे ।

पिया जिनगेहका आश्चर्य अधिकहै दिलमें ।
आज आया कोई धनवान है जिन मन्दिरमें ॥
देखो गजमोती चढ़ाये हैं घनी कीमतके ।
जन्म दारिद्र नशा जानिये अपने दिलमें ॥

माली ।

म०—बहु मूल्यहै ये मोती सुन नारि बात लीजे ।
भूपाल छिनालेगा घरमें नहीं रखीजे ॥

मालिन ।

ग०—बतलाइये उचितहै करना क्या इनका फिर अब ।
जैसा कहेगी वैसा मैंतो करूंगी बस अब ॥
ग०—जाओ स्ववाटिकामें बहु भांति सुमन लाओ ।
अरु गूंथके ये माला मन मोहनी बनाओ ॥

रानी गलेमें डालो वह देय पारितोषिक ॥
अरु नहिं उपाय दूजा जाओलो अभी जाओ ।

मालिन ।

ग०—जाती हूं लो इसीक्षण लाती सुमन चवेली ।
अरु गूथके इसी दम जाती हूँ मैं हवेली ॥

चला जाना (स्वागत) मालिन ।

दोहा—नृपके रानी दोय हैं, किसगल डालूं हार ।
हांनृपको लघुपर अती दीखत है मो प्यार ॥

वार्ता-राजाका छोटी रानीपर अधिक प्यार मालूम होता है,
इससे छोटी रानीके गलेमें ही डालना चाहिये ॥

(हार डालदेना) रानी ।

थियेटर-मालिन अच्छाहार बनाया है यह मेरे हृदय समाया
अबतक और नहीं कोई आया तेरे हाथ हाथ हाथ ।
ले मैं देती तुझे इनाम इसको अपने करमें थाम
बैठो थोड़ा करो विराम मानों बात बात बात ॥

रंगा ।

दोहा—बड़ी महलकी दासियां खड़ी हुती तहं कोय ।
जाय कही रनिवासमें, रानीसे फिर जोय ॥

दुबोला--रानीने त्यागकिया भोजन मारे गुस्सेके चूर हुई ।
राजा आये करने भोजन दोड़ी वांदी अति शूरहुई ॥

वांदी ।

दु०-महराज जोरकर खड़ी हुई फरयाद मेरी इक सुनलीजे

जेठी रानीने क्रोध किया बादीका कहना चित दीजे।
नहिं मुख प्रक्षाल किया उसने आसूंकी नदी बहाती है,
त्यागा जलपान सभी राजन शोकाग्निसेहृदय दहाती है

राजाका जेठी रानीसे।

दु०-ऐ प्यारी क्यों तू क्रोध किया विरतांत वो सभी सुनादीजे
जलपान भी तूने त्याग किया दिलविलखतझटबतलादीजे

रानी।

दु०-क्या बात पूछते अब हमसे मैं निज कर्मोंकी मारी हूँ,
मैं देखके अपनी निंदाको खुदहीसे खुदधिक्कारी हूँ॥

राजा।

दु०-आखिर क्या बात बतादीजे मेरे दिलमें अकुलाई है।
निंदा किसनेकी है तुमरी अद्भुत यह बात सुनाई है॥

रानी।

ला०—क्या कहूँ काम कुछ भी नहिं है अवनीसे। मेरा आदर टुक मुझे न अब तो दीसे॥ छोटी रानी है प्राणोंसे प्यारी आपहि अरु सबके निंद्याबड़ी हमारी। मालिन भी निंदा आज लाई इकहारा। दीना छोटी मोहि नहिं दीना भूपारा। तज दूंगी अपने प्राण तरह इसहीसे॥ मेरा०॥

राजा।

व०—शोक इतना करो हो जरा बातपर मेरी प्यारी तुम्हारी है बुद्धी कहाँ। मैं कभी निंद्यता क्या

कहोतो तुम्हें धरले धीरज मेरे मनमें दुखहै महा ॥
वाको मालिन है लाई विचारी सही, हार फूलों सहित
इसमें निंदा कहा । मैं गढ़ाऊंगा मोतिनहार खुदही
तुझे चाहे होवेगी कीमत महासे महा ॥

कवि ।

दोहा—सुनरानी हर्षित हुई राजाकी यह बात ।
मुख प्रक्षाल भोजन कियौ और सुनै विख्यात ॥

राजाका कोतवालसे ।

वार्ता—आय कोतवाल तू अभी जा और नग्रके तमाम
जौहरियोंको बुलाला ।

कोतवाल ।

अच्छा महाराजा जाताहूँ —(बुलालाना)

राजाका जौहरियोंसे ।

क०—सुनो अय नग्रके जौहरि मेरा इककाम है तुमसे ।
मुझे लादो वो गजमोती तुरत सब दामले हमसे ॥

जौहरी ।

क०—प्रजा रक्षक सुनो राजन् नहीं उत्पन्न हों मोती ।
कहो देवें कहांसे हम नहींहै एक भी मोती ॥

राजा ।

दोहा—अच्छा निजघर जाइये और नहीं कछु काम ।
नहिं चिंता इस बातकी छोड़ो इसका नाम ॥
चौ०—छोड़ो इसका नाम बात दूजी भी इक सुनलीजे ।

दोय चार दशवीस दिना छह महिना वरष व्यतीते ॥
कहता सत सत बात अगर इकभी गजमोती दीखे
देऊं दण्ड अपार कि उसका वही मजा वहु चीखे ॥
दौ०----अगर गजमोती पाऊं। सुनो कह सत्य सुनाऊं
खैंच भुष खाल भराऊं
देश निकाला देऊं और गृह लक्ष्मी सभी लुटाऊं ॥

रङ्गा।

लावनी०----आगे यह सज्जन दृष्य अपूर्व सुनीजे। जो जो व्याख्या होवे सो चित धरलीजे। जब हुई सभा वरखास्त सभ्य भूपतिकी। सुन लेओ कथा हिमदत्त सेठकी मतिकी। हिमदत्त पहुंच घर मनमें करै विचारा। जिंदगानी अल्पहु नाहिं निवारा। लघु पुत्र वधू हर वार मेरे घर आवे। जिनमन्दिर मोती रुकवै नाहिं चढावै॥ सुनकर राजा लै मेरी द्रव्य लुटाई। नहिं वहु है यहतो अच्छी आफत आई॥ कहका उसने यह प्राणखान व्रत लीना। इस धर्म नियसे लाग्यो अघ अति भीना।

हिमदत्त सेठका पुत्रोंको बुलाकर

दोहा----सुनों पुत्र अब क्या करें बहू जब आवे सार।
मोतिन पुंज चढ़ायगी लक्षि लुटै भरमार ॥

ज्येष्ठ पुत्रका।

पिता सुन लीजिये इक बात हमको सूझी है।

पुत्र लघु काढ़िये नहिं और बात दूजी है॥

पिताका।

शैर—पिताको पुत्र जनम प्राणसे भी प्यारा है।
कैसे कर काढ़ दूँ किसका मुझे सहारा है।

ज्येष्ठ पुत्रका।

शैर—अगर वह प्यारा है तो उसको घर ही रखिये पिता
जाते हैं हम छहों रहने के नहीं हैं हा पिता।

कविका।

दोहा—सुन यह पुत्रोंके वचन हिमदत सेठ सुजान।
नैनन नीर बहावता भूल गया सब ज्ञान।

चौ०-भूल गया सब ज्ञान बिलखता कड़ा किया कछु मनको
लेकर कागज हाथ रोवता बैठा वहाँ लिखनको
लिख बुधसेनका देश निकाला खुशी हुई पुत्रनको।
उसी समय भेजा घर बुधको क्या जाने उन मनको॥

दौ०—दिया कागज दासीको। सुनाया यह दासीको।
बुद्धसेन जब आवै।
पहले कागज वाच बादमें पत्र देना भीतरको वह जावै।

बुद्धसेनका आना (दासीका)

दोहा—पहले कागज बांचिये कोमल बदन कुमार।
बांच पत्रिका बादमें अन्दरको पग धार।

सुकुमारका (स्व) ग०

कहो कहाँ जाऊँरे, कुछ भी तो मुझे सुहायना।कहो०।

कहो भ्रात छह कमाऊ हुये हमको निकाला (तात) हमको निकाला। दीखै नहीं ठाऊँ रे। पितु आज्ञा भी निभावना ॥ १ ॥ तात मात भूठे हैं, ये लक्ष्मी धिकारी २ हाय किसे भाऊँरे। आखू ही मुझे वहाँ बना ॥ २ ॥ जाऊँ जो विदेशहिं तिय सुन पैहैं (मेरी) तिय सुन पैहै यासे मिल आऊँ रे। नहिं उस हो प्राण गमावना ॥३॥

कविका।

दोहा—भृकुटी टेढ़ी कर्मकी, रोक सके नहिं कोय।
जो हरि सुतका आज यह, देश निकाला होय॥

छंद—बांचत ही कागजको कुवर उलटेही पैरों चल दिया।
नहिं अश्वसे उतरा कभी वह हाय पैदल चल दिया॥
हो धूप देख शरीर कोमल आम फल युत हो पका।
भूखोंके मारे दम निकलती पास नहिं एकहु टका॥
करता जो भोजन छह रसोंके आज भूखा चित्र है।
धनका भरोसा है नहीं कर्मो की चाल विचित्र है॥
ज्यादह कहूँ क्या चलते २ पहुंचा हस्तिनापुर नगर।
सोता था बागोंमें कि मालिनकी पड़ी उनपर नजर॥
माली सुना यह बात पहुंचा। सेठ ढिग आनद पगा।
सब हालको निज सेठसे वह इस तरह कहने लगा॥

मालीका।

शैर—पुत्रध्वज कोटिका भवदीय जमाई आया।
मैंने पहचान लिया आपको है जतलाया॥

सेठका ।

शैर—कहाँ है संगमें कितना सभी लश्कर आया।
हमें बतलाओ सही डेरा कहाँ डलवाया॥

मालीका ।

शैर—सो रहा बागमें कोई नहीं बशर संगमें ।
नहीं है अश्व भी जोरोंसे थका है मगमें ॥

(दूसरे जौहरीका)

शैर—करके सन्मान अधिक अपने मकाँ लाओ तुम ।
ढुक न अरसा करो जाओ लो अभी जाओ तुम ॥

कविका ।

दोहा—झट पट पहुंचा बाटिका किया न तनिक बिलम्ब ।
लाकर घर जा मातृको त्रियसे कही अखम्म ॥
चौ०—त्रियसे कही अखम्म बात पूछन नहिं चहिये प्यारी
अति ही चंचल जात त्रियाकी अवगुण रूप कुठारी ॥
बोली चंचल नारि बात इक शून्य विचार अपारी ।
पूछो कारण क्या झट कहने लगी दूसरी नारी ॥
दौ०—मिला सुन्दरिसे दीजे । और कुछ भी नहिं कीजे ।
पहर भर निशि जब बीती ।
कंथ त्रिया जब मिले सुन्दरी बोली बाणी शीती ।

सुन्दरीका कुमारसे ।

व०—मैं हूँ नारि तुम्हारी हजारी बलम हाल प्यारीसे

कुछ भी छिपाओ नहीं । बिन बुलाये जो आये हों सखुरालमें सच्च बताओ शरम दिलमें खाओ नहीं ॥

कुमारका ।

व०—चन्द्रवदनी करमकी गतीको कोई टाल सकता नहीं, चाहे अति शूर हो । बस तनिकमें ही जानो बहुत बातको कर्मसे फिरना होता है मजबूर हो ॥

सुन्दरीका ।

व०—है करमकी गती दुःखदाई पती लक्षियुत दीन हो हो दरिद्र धनी । इस समय तो करमने है क्या लौट ली दिलजला जात पियु दुःख भरी सुन धुनी

कुमारका ।

व०—तात अरु मात अरु भ्रातकी कल्पना है यथारथमें कोई किसीका नहीं । भ्रात छहही कमाऊ हुए बस हमीं मंद भागी कहन तुमसे आये यहीं ।

सुन्दरीका ।

व०—अब सभी शोकको नाशकर प्राण पियु हस्थिनापुर नगरमें ठिकाना करो । तुमको मेरी कसम २ अब कहीं भी नहीं तुम पयाना करो ॥

सुकुमारका ।

दोहा---अगर जमाई जा बसै, सुन जो कहु ससुरार ।
कुल दोपी उस मनुजको, बार २ धिक्कार ॥१॥

शैर---मानूं हरगिज नहीं परदेशको मैं जाऊँगा

द्रव्य पैदा करूं पुरुषार्थ कर दिखाऊँगा ॥
रहके पीहरमें करो भोग आदि मनमाने।
सत्य सुन शीघ्र ही वापिस मैं लौट आऊँगा

सुन्दरी ।

शैर—गर इरादा है यही संग मुझे ले लीजे
सर झुकाती हूँ कदम हुक्म मुझे दे दीजे
नारि सुख भोगे सहै दुःख पति विदेशनमें
धिक वो पतिविरता नहीं मुझको न दोषी कीजे
जाँयगे आप अगर मुझको अकेली तज कर
प्राण तत्काल तजूँ जान ये दिलमें लीजे

कवि ।

दोहा—पतिने निश्चय कर लिया यह रहनेकी नाय
गहने सब उतरायके लीनी संग लिवाय
छंद—दिन चारके उपरान्त पहुंचे रत्नपुरमें दम्पती
जलपान उन कीना नहीं अतिही दुखित है दम्पती
जिन दर्श गजमोती विना जिन नाम उरमें लावती
हैं नारि पति उद्यान बैठे पास नहिं एकहु रती
जब केश देखे नारि तो वह थर हरा कहने लगी
भूले हुए इन मोतियोंसे भोज्य कुछ लाओ पती
पतिको जिमा भोजन अपन भूखी रही दिन सात वः
जिन दर्श गजमोती बिना अरहंतको ध्यावे सती

कवि ।

ला०—कंपा जब आसन इन्द्र अवधिसे जाना । उस पतिविरताके सब दुःखको अनुमाना । है धन्य त्रिया यह दृढ़ व्रत पालनहारी । रह गये कण्ठमें प्राण न चिगै विचारी । झट करौ सहाय इन्द्र यह हुक्म सुनाया । सुन करके झट इक देव रतनपुर आया । मुहरा रच मोती ढेर बनाये अपारा । ले पुंज दरशाकर सुख दिल अन्दर धारा । बाहर नर माद्दी मोती जोड़ा पायो । पुलकित हो उसने अपने हाथ उठायो । अष्टम दिन भोजनकर निज नाम जगायो, नर मोती दे पतिको यों वचन सुनायो ॥

सुन्दरी ।

दोहा—यह मोती ले जाइये, प्रीतम प्राण अधार ।
गहनेसे मोहर उठा, जइयो नृप दरबार ॥

चौ०—जाकर नृप दरबार, मुहर वह द्वारपालको देना ।
जहाँ करे भूपाल कचहरी, वहाँ चले ही जाना ॥
भयका नाम निशान पिया, नहिं अपने दिलमें लाना
जय जिनेशाकर करका मोती भेट नृपहि कर आना ॥

दौ०—मान पिय मेरी लीजे । न अब कुछ देरी कीजे ॥
जाय लाओ इक मोहर ।
फिर देखो व्यापार तनिक सा करता है ये क्या नर ।

रङ्गा ।

दोहा—सुनत बचन निज नारिके, ले आया दीनार ।
गहनेसे मोहर उठा, पहुंचा नृप दरबार ॥

सुकमारका राजासे ।

दोहा—जय जिनेश स्वीकार हो, प्रतिपालक महाराज ।
न्याय नीति पूरित महा, विकट सुधारन काज ॥
चौ०—विकट सुधारन काज शत्रु-दल दूरहिं देख डरावै
दीन होय धनवान दुखीजन दुःख निवृत्तता पावें ॥
अन्यायी अन्याय चोर नहिं लूट मचाने पावें ।
थर हर कापें अत्याचारी नाम अगर सुन पावें ॥
दौ०—भेट यह निज कर लीजे । कृतारथ मुझको कीजे ।
जाऊँ मैं अपने डेरे ।
दीजे आज्ञा हे नृपाल प्रति पालक धन अब मेरे ॥

राजा ।

दोहा—कित ठहरे सुकुमार तुम, लीजे पान चबाय ।
यह मकान लख लीजिये, रहो यहाँपर आय ॥
चौ०—रहोयहाँ पर आय धन्य जौहरि हो तुम्हीं कुमारा।
जो ऐसे २ मोतीका करते हो व्यापारा ॥
ऐसा सुन्दर मोती हमने अब तक नाहिं निहारा ।
चटकीला चमकीला सुन्दर रूपवान अति प्यारा ॥
दौ०—जिते जन तुम्हें चाहिये । यहाँसे लिवा जाइये ।

आयकर यहीं ठहरिये।

मनमाना व्यापार नगरमें जी चाहै सो करिये ॥

(चला जाना)---राजाका भण्डारीसे।

दोहा----भण्डारीजी लाल यह, रखो जल्द ही जाय।
खोल खजानेमें इसे, कोई न लेय चुराय ॥

कवि।

ला०—दूसरे दिन फिर सुकमार कचहरी आया। वह ही मोती भुवपाल भेंटको लाया। राजा जब देखा फूला नहीं समाया। दिलमें विचारता अच्छा जोड़ा पाया। फिर भण्डारी बुलवाय हुक्म यों दीना। ले आओ जो भण्डार मांहि रख दीना। भण्डारीने जब देखा दृष्टि पसारी। पाया नहिं जब सब सुध बुध तुरत बिसारी। देवें जवाब क्या दिल अन्दर घबड़ाया। फिर थर हराय भूपतिको वचन सुनाया ॥

भण्डारी।

दोहा—चिरंजीवी गद्दी रहे, अनदाता सरकार।
विकट चोर आया कोई, नृप तुमरे दरबार ॥

चौ०—आया है दरबार माहिं नहिं खोफ़ जरा भी खाया।
थर हर कापें देह मेरी कहते हे नर-पति राया ॥
निधड़कतासे तस्कर वह बस उसी खजाने धाया।
बेश कीमती कान्तिमान नृप मोती वही चुराया ॥

दौ०—लगा वैसा ही लाला। अरज सुनिये भूपाला
गजबका तारा चमका।
मेरे दिलका तेज हुआ बस वही खजाना गमका॥

राजा।

दोहा—रे पापी जाना मैंने, आया तेरा काल।
चोरी हुई दरबारसे, वृथा बजाता गाल॥
चौ०—वृथा बजाता गाल कालके मुँह जावै हत्यारे।
कर दे साफ बयान दण्ड नहिं पावैगा बटमारे॥
क्या मजाल तस्करकी आवै चोरी करन यहां रे।
बसै मनुष्य आकाश मांहि धरणी पै आवै तारे॥
दौ०—चुराया तूने लाल है। चोरकी क्या मजाल है
है क्या कोई खल्लासी।
ले जाओ जल्लाद पास लगवा दो इसकी फाँसी॥

सुकमार।

दोहा— गुस्सा शीतल कीजिये, धीरज धाम नरेश।
कल फिर जोड़ मिलाय दूं रखियो पास हमेश॥
छंद—माफ इसकी चूकको अय भूप करना चाहिये।
त्यागकर गुस्सेको दिल धैर्य धरना चाहिये॥
वार्ता (अच्छा जय जिनेश) (चला जाना)

कवि।

दोहा०—उसी तरह दिन दूसरे, चला कुँवर दरबार।
भेंट दिया मोती तुरत, खुलवाया भण्डार॥

क०—नहीं निकला जभी मोती दुखी दिलमें हुआ भारी।
बना जस चित्रपट होवै हुआ स्थिर वो भण्डारी ॥
किया सिद्धान्त दृढ़ उसने निकलनी जान अब मेरी।
नृपति सूली चढ़ायेगा कुटी शमशान है जारी ॥
रहा विह्वल पहुंच भूपति निकट चुप चाप घबराता
उसे अवलोक इस विधिसे नृपति गुस्सा किया भारी ॥
क०—बहाना ढूंढ़ पाया है अबे ओ चोर ओ पापी।
समझता था अभी सच्चा निरखली तेरी गुस्ताकी ॥
अरे आओरे जल्लादो निकालो नैन झट इसके।
चढ़ादो दारपर इसको लगादो जल्द या फाँसी ॥

सुकमार।

क०—नहीं कुछ दोष है इसका कहूं सुन लीजिये राजन्
ये नर मादा हैं ऐसे ही यकी कर लीजिये राजन् ॥
हजारों कोससे उड़नर पहुंचता पास मादाके।
रखो दोनों ही निज घरमें रहेंगे पास अब राजन् ॥

(परी गायन।)

क०—हो धनसुकमार दुनियाँमें प्रभाकर हो तो ऐसा हो,
बचाई जाँ कुठारीकी दयाकर हो तो ऐसा हो ॥
गया परदेश बेखटके निभानेको हुकुम पितु का।
न रह ससुराल कुल लज्जा बचाकर हो तो ऐसा हो ॥
प्रियाको साथ ले करके करमको आजमाया है
सती व्रतसे मिटा दुख सब प्रियावर हो तो ऐसा हो ॥

राजा ।

थियेटर—तुम हो धन २ धन सुकमार, तुमपर जाता हूँ
बलिहार। पुत्रीवरो हमारी सार, मानों बात २ बात ॥

सुकमार ।

थियेटर—अच्छा स्वीकृत है महराज, कीजे अपने सबही
काज, सामग्री भी लीजे साज दुखको टार २ टार ॥
ब्याह होना (परियोंका मुबारकबाद गाना)

क०—मुबारिक बाद गाओरी बधाई है बधाई है।
दुलारीकी निरख जोड़ी उमग अति दिलमें छाई है ॥
खिले जस चांदनी निशिमें बढ़ै अति चन्द्रकी शोभा
काम रतिकी तरह जैसी सुहाई है सुहाई है ॥
प्रभू जोड़ी ये चिरंजीव रहै यह कामना मेरी।
फले फूले जहाँमें अय जिनेश्वर तू सहाई है ॥

रङ्गा ।

दोहा—साज बाजके साथमें, ब्याह हुआ सुकमार ।
विदा आदिमें भूप धन, दीना अपरम्पार ॥

चौ०—दीना अपरम्पार राज्य भी सौंप दिया चौथाई ।
पाकरके ऐश्वर्य मान आवै सब ही को भाई ॥
इसी नीति अनुसार कुवरको भी कुछ मदता आई
राजकुमारी महल रहै सुन्दरिकी सुधि बिसराई ॥

दो०—बहुत दिन बीत गये जब। निकट आई सुन्दरि तब
ध्यान दे सुनिये प्राणी ॥

उसी समय प्रीतमसे सुन्दरि ऐसे बोली बानी ॥

सुन्दरी

कवित्त—बात मेरी प्राणनाथ हृदय बिचार करौ भूल सुधि गये हस्थिनागपुर नगरकी । बाबुलने काढ़ौ संग मैने तब धारौ नाथ भूल सुधि गये याही रत्नपुर डगरकी ॥ राज मद आप कीनौ मुझको भुलाय । हूँ सुखी या तड़फती कछू नाहिं ये खबरकी ॥ चिंता नहीं इसकी पर चिंता यह विकट मोय भूलना नहीं सुधि उस पर ब्रह्म 'हर' की ॥

सुकमार ।

कवित्त—चूक मृगनैनी सब माफ़ करदीजे मोर तेरे ही प्रतापसे ये दुःख बेड़ी कटी है। मेरी ही खता प्यारी मेरे ही जिगर माहिं लज्जाके रूपमें हो कील जैसी अटी है ॥ तेरे उपकारको मैं भूल नहीं सकता प्यारी तेरे उपकारकी एनीव पुख्त उठी है । कीजे हुक्म जैसा मैं करू झटही वैसा प्यारी चूक नहीं सकता बुद्धसेन एक घड़ी है ।

सुन्दरी ।

क०—धरमकी नाव दुनियामें करैगी पार ये नैया ।
धरम ही है कुमारगसे पिया सत्पथका दरसैया ॥
रचाओ जिन भवन ऐ सामनै आदर्श दुनियाँमें ।
बैठ अति कीर्ति इसभवमें सुगम उस भवकी हो नैया

धरमके काज अय प्रीतम न कुछ देरी करीजे अब।
धरम ही सारहै जगमें दुखोंका छार करवैया॥

सुकमार।

शैर—हुक्म हो प्राण प्रिया उसको कर दिखाऊँमें।
कोसके गिर्दका जिन चैत्य शुभ रचाऊं में॥
अच्छा जाताहूँ अभी बिप्रको बुलाता हूँ।
घड़ी शुभ होगी जभी नीवधरा आऊं में॥
देश देशोंमें ढिढोरा पिटा दूं जल्दीसे।
हर जगहके प्रिया मजदूर भी बुलाऊं में॥

रङ्गा।

ला०—जाकरके झट सुकमार विप्र बुलवाया। शुभ दिवस और शुभ ही मुहूर्त सुधवाया॥ अरु देश देशके माहिं खबर पठवाई। मजदूर जुरे बहु संख्या में अधिकाई॥ बस इसी तरह उत हुआ कार्य प्रारम्भ। बहु शिल्प कलासे बनें सुशोभित खम्भ॥ देखा भालीको कोतवाल बैठाया। सुकमार दरोगासे यों बचन सुनाया॥

सुकमारका दरोगासे।

दोहा—जितने आवें मिहनती, फेर न जावें कोय।
नितप्रति सबके वास्ते पैसा देना दोय॥

कवि।

करमगति है अति दुखदाई न तुम अभिमान करो भाई

कथा वल्लभपुरकी सुनना कभी निंदा न धरम करना ॥

दोहा—की निन्दा हिमदत्त सेठने, सुतको दिया निकार।
छै महीनामें छयानव कोटी, रही न इक दीनार ॥
सदा नहिं लक्षि रहै भाई ॥ न तुम० ॥
सिरपर भार धरें ईंधनको वेचन जाय बजार।
उदर पूर्ति तबहू नहिं होवै मिलैन सांझसकार ॥
भीख उन मांग मांग खाई ॥ न तुम० ॥
मागत मागत आये रतनपुर ये सब चौदह जीव।
मजदूरीको उसी कुंवर ढिग पहुंचे दुखित अतीव।
अर्ज फिर यों उनने गाई ॥

चौदह जीवोंका कुमारसे।

ग०—कीजै दया हो राजन् कदमोंमें सर झुकाऊं।
मजदूर बनालीजे उपकार बहु मनाऊं ॥
परदेशी तड़फते हैं उत्तम कुलीन जानों।
कर्मोंकी लौट ये सब सत सत तुम्हें सुनाऊं ॥
जो गर हमें लगाओ अति पुण्य तुम्हें होगा।
तन मनसे करें मिहनत हा हा तुमारे खाऊं ॥

कुमार।

ग०—अच्छा यहां ही बैठो आताहूँ अभीमें झट।
सबको लगाऊं सबही फिर काम करीजो झट ॥

कवि।

देय दिलासा इस तरह सुन्दरि निकट कुमार।

बोला वाणी इस तरह लीजे जरा निहार ॥

कुमार ।

व०—तात अरु मात अरु भ्रात भावज सभी आये हैं तिनको कोई सहारा नहीं । मागते भीख फिरते हैं, नारी सुनों सांझ तक तभी होता गुजारा नहीं ॥ मैं मजूरी लगा भार अति ही धरूं मो निकारा था कुछ भी विचारा नहीं । दावहै आज मेरा करूं क्यों कभी फिर मिलैगा समय ये दुबारा नहीं ॥

सुन्दरी ।

व०—जन्म जिनसे हुआ इन उचारों बचन धिक तुम्हें कहते आती नहीं कुछ शरम । कर्म अपनेको भोगा किया पूर्वमें दोषी देके किसीको न छोड़ो धरम ॥ कोट भी जो गर्चे उपकार तुम ऋण नहीं पूर्ण तब कर सकोगे परम । मेलकीजे न मालूम होवे कहीं जानपावे न कोई भी इसका मरम ॥

सुकुमार ।

व०—इन किया गर्व भारी मेरे संगमें बात कुछ भी मेरी इन विचारी नहीं । बार इकही मंजुरी लगाऊं इन्हें ताप जबतक मिटेगी हमारी नहीं ॥ भार भारी धराऊं करूं न कसर तब तलक मेरे कोई वो प्यारी नहीं । फिर करो हुक्म जैसा करूंगा वहीं इस समय सीखधारूं तुम्हारी नहीं ॥

सुन्दरी।

ब०—बालमा बात सुनिये न करिये गुमा राज ठसकामें कुछ भी विचारो नहीं। कोटि ध्वज मांगते भीख फिरने लगे कौन गणना तुम्हारी निहारो नहीं॥ लक्षि चांचल पिया शुभ करमसे मिलेहों अशुभ तया लो कोई सहारो नहीं। जान परछांहिं इस लक्ष्मी को गरव प्राणपियु अपने दिलमें ये धारो नहीं॥

सुकुमार।

ब०—राजठसका कहो या कहो कुछ भी तुम इक दफे तो मजूरी लगाऊं प्रिया। बादमें जो कहोगी करूंगा वही इस समय दिलमें कुछ भी न लाया प्रिया॥ फिर करूंगा मिलन निज कुटुमसे सभी गर्व इनका वो सबही मिटाऊं प्रिया। उस मेरे देश बाहर किये की वजह भार इन पर मैं भार धराऊं प्रिया॥

सुन्दरी।

मान शिक्षा गरब दिलमें लाओ मती॥

नहीं मानोगे अगर आप ये रचाओगे; हाय इस पापसे पिय दुक्ख बहुत पाओगे। जन्म जिनसे हुआ नीचा करम कराओगे, जान पावेगा कोई नाम बहु धराओगे॥ तो कभी दिलमें सुखको न पाओ पती॥मान०॥ करना ऐसाही है तो यह बात मेरी सुन लीजे। तात अरु मातको बैठे ही मंजुरी दीजे। काम कुछ दिन करा

कुटुम्बसे मिलाप करो। भ्रात भावज पै पिया बोझ अधिक कम ही धरो। और कुछ बात दिलमें भी लाओ मती ॥ मान० ॥ कवि।

दो०—नारी ने जब इस तरह, समझाया हरचंद।
इस विधि मानी सीख यह, सुनिये सज्जन वृन्द ॥

चौ०—सुनिये सज्जन वृन्द दरोगासे यों बोला वानी।
इनसे काम न होवे ये बूढ़े हैं दोनों प्राणी ॥
इनको बैठे देहु मंजुरी वाकीसे मन मानी।
मिहनत लेना कार्य समयमें नहिं करें आनापानी ॥

दौ०—बहुत दिन बीत गये जब। बुलाई सुन्दरिने तब
अपनी सासु हवेली।
काढ़नको पहिचान सुन्दरी ऐसे वानी बोली ॥

सुन्दरी।

दोहा—माता आय समीपमें, देखो मेरे केश।
डरो नहीं मनमें तनिक, चिंता करो न लेश ॥

बुढ़िया।

दोहा—तुमकोटी ध्वजकी वहू, हैं हम दीन अपार।
कीजे माफ कसूर मम, लीजे जरा निहार ॥

चौ०—लीजे जरा निहार रंकअति हैं हम राज दुलारी।
भरैं उदर तुमरे ढिग हम कर करके खिदमतगारी
मेरे अङ्ग शुद्ध वस्त्र ऐकहु भी दीखै प्यारी।
इसी लिये तुम ढिग आनेको चलै न शक्ति हमारी ॥

दौ०—बस यही है मजबूरी। रहूँगी तुमसे दूरी॥
हुक्म हठसे हो खासी।
तो सेवा करनेको भी तैयार सदा ये दासी॥

कवि।

क०—फिर दिलासा ताकौ दई अब मनमें चिंत करौ मतकोई। तबही ताके पास गई अरु रेशम डोरी खोलत जोई॥ गूथको चिन्ह लखौ शिरमें तब ताको देख वृद्धा पुन रोई। रोवत देखजो सुन्दरीने अति कोमल बैन कहे इमजोई॥

सुन्दरी।

ग०—माता हुआ क्या दुख तुम्हें क्या तुमको कोई पीर है।
कीना रुदन जो इस तरह नयनों बहाया नीर है॥

बुढ़िया।

ग०—हायमें अगली बातकी अपनी कथा सुनाऊं क्या।
मानन कोई भी मनुष ऐसी बिथा सुनाऊं क्या॥

सुन्दरी।

ग०—चिंता करो न कोई भी दिलमें तो धरले धीर तूं।
हो जो यथार्थमें वही अपनी सुनादे पीर तू॥

बुढ़िया।

ग०—हा! हम न पहिले रंक थे कोटि ध्वज महाधनी।
थे पुत्र मेरे सात वो वनमें निठुर ही जांऊ क्या॥
पूरब करम उदय हुआ लहुरेको हम भगा दिया।

थी नारि उसकी सद्वृता तुमसे मैं अब छिपाऊं क्या।
जाने पै पुत्रके ही तो सारा ही धन बिलय हुआ।
था चिन्ह वैसा उस वहूके वसमें अब बताऊं क्या॥

सुन्दरी।

ग०—मैं हूँ कहांकी बहू तेरी कितकी तू मेरी सासु है।
इसको निकालो दासियो है दास बनती सासु है॥

रङ्गा।

दोहा—ऊपर मनसे सुन्दरी, करी डाट ललकार।
अन्तरमें सासू यही, था यह शुद्ध विचार॥

चौ०—था यह शुद्ध विचार दासियोंसे यंही भगवाई।
कंकड़ पत्थर आदि मार ऊपरी दिखावट लाई॥
भग बुढ़ियाने पति पुत्रनको सारी कथा सुनाई।
थरहर काप उठे सबही दिल छाय रही अकुलाई॥

दौ०—न जानै क्या कह आई, कहांकी बहू बनाई
दुःख प्रगटो यह आई।
उसी समय सुन्दरीने भी निज प्रीतम लियौ बुलाई॥

सुन्दरी।

दोहा—घरमें बैठे सुख तुम, भोग रहे भरतार।
ऐसे निंद्य कुकर्मको, है शतसः धिक्कार॥

चौ०—है शतसः धिक्कार बैठघर तुम आराम उठाओ॥
मात पिता सम भावज भ्राता पर अति भार धराओ
करके निंद्य कुकर्म पिया कुछतो दिलमें शरमाओ॥

गई बातको जान देहु अब मेल मिलाप कराओ।
दौ०—हुआ हठ तुमारा पूरा। न बाकी रहा अधूरा॥
नहीं अब भी मानोगे।
करूं बुराई सभी जगह बस तुम्हीं सभी जानोगे।

सुकमार।

दोहा—थी कुछ मेरे जिगरमें, तू कहती कुछ और।
काम कराऊं और भी, थी दिलमें इस तौर॥
चौ०—थी दिलमें इस तौर मगर हरबार रोकती तू है।
कुटुम मिलाप करो येही हरवार टोकती तू है॥
भरती मुंहसे आह जिस घड़ी उन्हे लोकती तू है।
करूं बुराई तुमरी यह झनकार ठोकती तू है॥
दौ०—कहा अब तेरा मानूं। और नहिं दिलमें ठानूं
जायकर उन्हें बुलाऊं।
मन मुराद पूरी हुई अब तो कुटुम मिलाप कराऊं॥
बुलाना—(पिताका काँपते हुये आना)
दोहा—इस बुढ़ियाकी चूकको, माफ करो सुकमार।
हा हा खा पैया परूं, प्राण भीख दो डार॥

बुधसेन।

व०—मत पड़ो पैर मेरे वही पुत्र हूँ जो करम योगसे था दुहागी बना। माफ कीजे खता कण्ठ लीजे लगा करके दरशन पिता मैं सुहागी बना॥ मेरी मैया वही दुधमुहा लाल हूं तूने पाला जिसे प्राण

रागी बना। काम तुमसे लिया भ्रात भावज मेरे माफ कीजे हूँ मैं पाप भागी बना॥

पिता।

व०— हा मेरे लाल ओ लाल ओ लाड़िले पाप भागी हमी जो निकाला कुवर। तेरे जाने पै धन सब बिलय हो गया फिर पड़ा दुःखसे ही वो पाला कुँवर, दीनतासे गुजारा किया घूमकर दुःख सहने पड़े हैं विशाला कुवर। घूमते घूमते आये तेरी शरण आज मौका मिला फिर ये लाल कुवर॥

बड़ा भाई।

व०—अय मेरे वीर कीजे मुझे माफ अब हैं गुनहगार हमहीं तुमारे विरन। हम छहोंने ही बाहर कराया तुम्हें बोये कांटे सभी हैं हमारे विरन॥ उस जनम में मिलै सो मिलै पाय फल इस जनममें सहे दुःख करारे विरन। माफ कीजे हमें माफ कीजे हमें आये अब तो शरणमें तुम्हारे विरन॥

दोहा—मिला कुटुम परवार सब, विविध भाँति हरषाय
पहिने सुन्दर वस्त्र सब, गहने लिये सजाय॥

चौ०—गहने लिए सजाय जाय फिर नगरीके बागनमें डेरा दिये डराय कुंवरने खबर करी सब जनमें॥
आया कूटुम हमारा पहुंचे सब मिल कर बागनमें।
लिवा लाये नगरीमें अति उल्लास बढ़ाके मनमें॥

क०—हुआ तैयार जिन मन्दिर बनी शोभा निराली है
कगूरे झँझरिया सोहै छटा सुरलोक वाली है ॥
कहीं शीशे जड़े सोहैं कहीं मोती चमकते हैं।
कहीं पर है मढ़ा सोना कहीं लालोंकी लाली है ॥
कहीं पत्थर बिलौलीकी बनी वैलें सुहाती हैं।
बनी वेदी मनों धनपतिने ही आकर बनाली हैं ॥
दौ०—शिखिरकी शोभा भारी, ध्वजा फहराती प्यारी ॥
काम जब रहा न बाकी।
वुद्धसेनसे उसी समय यों बोली नारी ताकी ॥

सुन्दरी।

दोहा—प्राणनाथ जिन भवनतो, हुआ सभी तैयार।
ढील न कीजे अब तनिक, करो प्रतिष्ठा सार ॥

सुकमार।

दोहा—धन्य २ में धन्य हूँ, पायी तुझसी नार।
धर्म प्रेमनी धर्मकी, देती शिक्षा सार ॥
चौ०—देती शिक्षा सार करूं जा मेलाकी तैयारी।
पाती भेजूं सभी जगहके जुरें सकल नरनारी ॥
पण्डितको वुलवाय सुधाऊं शुभ मुहूर्त सुखकारी।
और कहो जो करूं बातमें, टारूं नहीं तुमारी ॥
दौ०—नृपतिके ढिगमें जाऊं, उन्हें सब हाल सुनाऊं।
करूं जल्दी तैयारी ॥
लोमें जाता अभी भूपढिग करूं देर नहिं प्यारी।

सुकमारका राजासे ।

दोहा—नृपति हुआ तैयार अब, जिन मन्दिर सुखकार।
हुक्म होय जो आपका, करूं प्रतिष्ठा सार ॥

चौ०—करूं प्रतिष्ठा सार हुक्म जो होवै भूप तुम्हारा।
देशों २ पाती लेकर भेजूंमें हरकारा ॥
लगै बहुत मेला नगरोंके जुरें सकल नरनारी ।
इसी कार्यके लिये आज आया तुमरे दरवारी ॥

दौ०—विप्रको बुलवा लीजै, ढील नहिं तनिक कीजिये
यही इच्छाहै मेरी ।
इस कारजके लिये नहीं करनी अच्छीहै देरी ॥

राजा ।

बार्ता—धन्य सुकमार बस तुम्हीं इस जगतमें धन्य हो और तुम्हारी ऐसी धर्माचरण बृतिसे मुझे अत्यन्त सन्तोष है ॥

दोहा—धन्य तुम्हारे पिताको, धन्य मात सुविशाल ।
जो तुमसा धर्मी सुगुण, जिसने जाया लाल ॥

चौ०—जाया तुमसा लाल धन्यमें तुम्हें दमाद बनाया।
कीजे अपना काज आज जो मुझको आय सुनाया ॥
मेरे लायक काम होय जो कहो करूं मनचाया ।
यह विचार आपका कुवर मम रग २ माहिं समाया ॥

दौ०—इधर सब काम रचादो, खबर हर जगह पठादो
विप्रको अभी बुलालो ।

दिवस मुहूर्त घड़ी शुभ आओ चलो अभी सुधवालो।

कवि।

दोहा—बुला विप्रको तुरत ही, दिन मुहूर्त सुधवाय।
देश देशको निमन्त्रण, पाती लिखी बनाय॥

कवित्त—मालव कुरुजाङ्गल अरुरान्द्र महाराष्ट्र माहिं पाती शुभ छंदनमें लिखीहै बनायके। कौशल गुजरात काश्मीरदेश मारवाड़ मागध बंगाल माहिं दीनी पठवायकें॥ अंग मद्रास आस पास सब देशनमें खंड औ बुन्देलखंड दीनी है बनायकें। बल्लभ-पुर हस्थिनापुर पुरमें बचा नाही हरपुरमें पाती दीनी चित्त हरषायेकें॥

लावनी—जिन मन्दिर सजा साजनोंसे अति भारी। देशों देशोंके जुरे सकल नरनारी॥ चउमुख प्रभु पारस मूर्ति वहां बैठारी। सबही शोभा देवोंकी थी मनहारी॥ तम्बू मंडफकी करी कुंवर तैयारी। ॥देशो०॥ जब गांठ जुरनका मोका आया प्यारा। तब राजकुमारीने दिलमें मद धारा॥ सुन्दरिसे गांठि न जुरे जुरैगी हमारी॥ देशो०॥ यह सुन सबके मन जल्द होगये फीके। सुकमारीके यह हैं बिचार नहिं नीके॥ पहुंचे भूपति ढिग ऐसे गिरा उचारी॥ देशो०॥

यात्रियोंका ।

च०—न्याय कीजे महाराज आये हैं हम अर्ज मेरी पै निज चित्त दीजे नृपत । दूधका दूध पानीका पानी-बने नोतिसे न्याय वे साही कीजे नृपत ॥ सुन्दरी की गांठि बंधवैगी यां आपकी पुत्रीकी गांठि बधवै व तीजे नृपत हठ किया है तुमारी कुमारीने ये न्याय कीजे नृपत न्याय कीजे नृपत ॥

राजा ।

च०—इसमें है कौनसी बात सोचो जरा काज सुन्दरीका सबही रचायाहै ये । मेरी वेटीको भड़का किसीने दिया होगा उसका वो सबही बनाया है ये ॥ गांठि सुन्दरि ही की बाधना चाहिये धर्म उसका वो सबही करायाहै ये । कहना जाके सुतासे कि हठ छोड़दे भूपने ही बचन अब सुनायाहै ये ॥

रङ्गा ।

दोहा—हुक्म नृपतिसे सुन्दरी, गांठि जुरी सुखकार ।
गायक जन गाने लगे, बोल बोल जयकार ॥

(गायन)

जिनवरको आज मनाले भ्रम मोहमें आनेवाले ।
मनको बनाले माला, श्रद्धान सूत आला ॥
थिर चित्तको बनाले जगधंध मिटानेवाले ॥ जिन० ॥
अणुव्रतका पहनो बाना तप अग्निको रखाना ।

अवसर न चूक जाना । (हरि) कहते कहने वाले ॥
जिनवर को० ॥

कवि ।

दोहा—इस बिधि सों जिन भवनकी, करी प्रतिष्ठा सार ।
धन्य जनम तिनको अवे, धन तिनको अवतार ॥
चौ०—धन तिनको अवतार दिना नौ वीत गये आनंदमें ।
मेला हुआ खलास गये सब खुशी भये अति मनमें ॥
हथनापुर बल्लभपुरके जन रोक दिये बागनमें ।
खूब किया सत्कार प्रेममें सना हुआ पुर जनमें ॥
दौ०—विते दो दिन सुखकारी । विदा होकर नर नारी ।
आये सब निज २ घरमें ।
भूपति पास पहुंच बोला इक जन आ बल्लभपुरमें ॥

मुसाफिर ।

व०—अर्ज सुनिये मेरी भूप भयसे तेरे सेठ हिमदत्तने
जो था निकाला कुँवर । रत्नपुरमें प्रतिष्ठा है उसने
करी जग शिरोमणि बना है वो आला कुँवर ॥

राजाका मंत्रीसे ।

व०—हाय मुझसा न पापी कोई दूसरा मेरे भयसे
निकाला गया जो ललन । ऐसा धर्मी मनुज है
नहिं दूसरा जैसा है वो ललन, जैसा है वो ललन ॥
था मुझे कुछ नहीं ज्ञात नारीके हैं सुखकारी सदा
जिन दरशका पिरन । मेरे मंत्री सुनों तुम लिवा

लाओ अब उस बिना अबतो होगा हमारा मरन ॥

मंत्री ।

दोहा—हुक्म होय जो आपका, मुझे नहीं इनकार ।
जल्दी जाता रतनपुर, लिवा लाऊं सुकमार ॥

रङ्गा ।

दोहा—जल्दी हुआ तयार वह, गिने दिवस नहिं रैन ।
पहुंच रतनपुर कुँवरसे, ऐसे बोला बैन ॥

मंत्री ।

दोहा—कुँवर आपके चरणमें, नाता हूं मैं माथ ।
भूपतिने भेजा मुझे, सुनिये मेरी बात ॥
चौ०—सुनिये मेरी बात आपको जल्दी से बुलवाया ॥
इसी लिये मुझको लिवावने उनने जल्द पठाया ।
सुनकर सब यह हाल आपका मनमें दुःख बढ़ाया ॥
बिन पहुंचे आपके वहाँपर प्राण तजेगा राया ।
दौ०—महरकी नजर कीजिये । मुझे कुछ धीर दीजिये
पूर्वमें ही कह दीना ।
बिना गये आपके नृपतिका नहीं होयगा जीना ॥

सुकुमार ।

दोहा—जिस नगरीसे भ्रात मम, मुझको हुआ दुहाग ।
वहाँ जावने का मुझे, नहीं रहा कुछ भाग ॥
चौ०—नहीं रहा कुछ भाग इसीसे जानेको डरता हूँ ।
बिनय आपसे यही जोर दीवान साव करता हूँ ॥

भूप प्रेम मुझपै भारी इसको स्वीकृत करता हूँ।
मैं भी बिन भूपतिके मुँहसे आह भरा करता हूँ॥
दौ०—जोड़कर बिनय कहीजे, नृपतिको धीरज दीजै
जाऊं नहिं वल्लभपुरमें।
भूपमूर्ति अरु प्रेम सदा रक्खूगा अपने उरमें॥

सुन्दरी।

दोहा—उचित नहीं यह प्राण पियु प्राण तजै भूपाल।
ढील न कीजै अब तनिक चलौ देशको हाल॥
चौ०—चलौ देशको हाल धर्मकी सुधि क्या पिया बिसारी
प्राण तजैगा भूप बात बिगरैगी सभी तुम्हारी॥
और बात सोचलो जरा तुम अपने हृदयमझारी।
राज जमाई कहें यहां पर तुम्हें सकल नरनारी॥
दौ०—कुटुमका चलै न नामा, रहोगे जो इस ठामा
देशको चलना चहिये।
लाओ हुक्म नृपतिसे अबही जाय न देर लगइये॥

रङ्गा।

दोहा—पहुंचा भूपतिके निकट करके दिल आनन्द।
प्रेमयुक्त बोला गिरा सुनिये सज्जन बृन्द॥
व०—कीजे मुझ पै कृपामें कहूं आपसे मेरी अर्जी पै
निज चित्तको दीजिये। हुक्म दीजे नृपति जाऊं
निज देशको शोक कुछ भी न दिलमें जरा कीजिये॥

राजा ।

व०—सुनके ऐसे वचन आपके ये कुवर सब मेरा छूटामें
सुनाऊं तुम्हें । आप जानेका कीजे इरादा नहीं
जानें दूंगा नहीं सच बताऊं तुम्हें ॥

कुंवर ।

व०—राजमन्त्री है आया लिवाने मुझे हुक्म दीजै वो
दिलमें दुखाओ नहीं । मो बिना भूप जीवित रहेगा
नहीं पाप मुझसे भारी कराओ नहीं ॥

राजा ।

व०—गर यही बात है जाइये देशको सब दिलमें नृप-
तिको बधाना कुंवर । रहके कुछ दिन वहां करके
मुझपै कृपा बस रतनपुर मैं ही लौट आना कुंवर ॥

सुकमार ।

व०—अच्छा जाता हूँ मैं आप मुझपै कृपा बस इसीही
तरहसे बनाये रहें । पार्श्व प्रभुसे विनय ये सदा है
मेरी प्रेम ऐसा ही दिलमें सनाये रहें ॥

रंगा ।

दोहा—हुक्म पायकर भूपका करके उचित जुहार ।
सज धज कर निज देशको चला शीघ्र सुकमार ॥
चौ०—चला शीघ्र सुकमार खबर यह बल्लभपुरमें आई
सासुरने सन्मान किया आनन्द बढ़ा अधिकाई ॥

षटरस भोजन दिये कुटमसे उचित मिलाप कराई।
दिना दोपहर होय विदा बल्लभपुर पहुंचे आई ॥
दौ०—खबर नृपने सुनपाई, नगरमें डोड़ पिटाई
गये मिलकर जन सारे।
कण्ठ लगा नृपने कुमारको ऐसे वचन उचारे ॥

राजा।

व०—माफ कीजे कुंवर माफ कीजे कुँवर हाल कुछ भी
सुना था तुम्हारा नहीं। तुमको बाहर किया है
पिताजीने कब दोष कुछभी इसीसे हमारा नहीं ॥

सुकमार।

व०—कौन कहता है हे पूज्य दोषी हो तुम, दासके
दोषको चित्त धारो नहीं। तातके तुल्य हैं आप
मैं पुत्र माफ कीजिये बाणी उचारे नहीं ॥

राजा।

व०—धन्य तुमको न है वस्तु जो आपके मान करनेको
हो इससे आभा रहूँ। मुझको कीजे क्षमा गुण पै
मैं आपके तनसे मनसे हृदयसे ही बलिहार हूँ ॥

कवि।

दौहा—भूपतिने बहु भांतिसे, किया कुँवर सत्कार।
फिर सब निज घरको चले, पिता पुत्र सुकमार ॥
चौ०—पिता पुत्र सुकमार सुन्दरी सासू सहित पधारी।
देखे सुन्दरि जिधर नजर भर दिखै सम्पदा भारी ॥

पूर्वकाल की तरह ध्वजा बावन फहराई प्यारी।
दर्शनका फल देख प्रतिज्ञा करो सकल नर नारी ॥
दौ०—दरश महिमा लख लीजे। प्रतिज्ञा सबही कीजे
प्रेम प्रभु मनमें घोरो।
एकबार सब मिल मुखसे जिनवरकी जय उचारो ॥
दोहा—नाटक यह पूरन हुआ, हुई लेखनी बन्द।
सबको है कर जोड़कर, मेरी जयति जिनन्द ॥
जो नर जिन दरशनमें भाई, सच्ची लगन लगायेगा।
करै प्रतिज्ञा दुख टारै, सुख भोग परम पद पावेगा ॥
अशुभ कर्मका उदय हुआ, जब सेठनेकुंवर निकालदिया
तुरंत कुवरने नारि मिलन को, हथनापुरका मार्ग लिया
दुख सहै नारिने पर नहिं अपने व्रतको छोड़ा था।
कण्ठ प्राण तक रहे, किंतु जिनवरसे नाता जोड़ा था ॥
दुख होंय सब दूर उसी बिधि, जो यह विरत निभायेग
प्रेम प्रभूसे जीव अनन्ते जग सागरमें होगा पार।
सेठ सुदर्शन अंजनसे जन कर गए निज कर्मोंको छार
मैना सतीने नाम जगाया सीताका कर लीजे ध्यान
श्रीपालने प्रेम बढ़ाकर उत्तम पद पाया निर्वान ॥
निश्चय पावै मुक्त फेर नहिं लौट कभी भी आयेगा।
करै प्रतिज्ञा दुख टरै सुख भोग परम पद पायेगा ॥

॥ समाप्तम् ॥

(दरशब्रतनाटक बागकेमोती)

ले मैं देती मुझे इनाम, इनको अपने करमें थाम ॥ पृष्ठ १२ ॥

राजा—ऐ प्यारी क्यों तूं क्रोध किया दिल बिलखत झट बतलादीजै ॥ पृष्ठ १३ ॥